बिहार में राष्ट्रीय मखाना बोर्ड का शुभारंभ

चर्चा में क्यों?

प्रधानमंत्री **नरेंद्र मोदी** ने **केंद्रीय बजट 2025** के तहत बिहार के **पूर्णिया** में राष्ट्रीय मखाना बोर्ड का उद्घाटन किया।

मुख्य बिंदु

- **राष्ट्रीय मखाना बोर्ड के बारे में:**
  - इस नए बोर्ड का उद्देश्य **मखाना क्षेत्र** को सशक्त करना, इसके उत्पादन और प्रसंस्करण को बढ़ाना तथा **वैश्विक स्तर** पर इसके निर्यात की पहुँच का विस्तार करना है।
- **लागत:**
  - सरकार ने इन प्रयासों को समर्थन देने के लिये **475 करोड़ रुपये** के विकास पैकेज को स्वीकृति दी है।
- **मुख्य क्षेत्र:** राष्ट्रीय मखाना बोर्ड मखाना क्षेत्र की वृद्धि के लिये निम्नलिखित पहलुओं पर ध्यान देगा:
  - उत्पादन मानकों में वृद्धि
    कटाई के बाद के प्रबंधन में सुधार
  - **नवोन्मेषी** प्रौद्योगिकियों का परिचय
  - मूल्य संवर्द्धन
  - प्रभावी विपणन और **निर्यात तंत्र** विकसित करना
  - किसान-उत्पादक संगठनों की सहायता करना, ताकि वे **केंद्रीय योजनाओं** तक पहुँच बना सकें
- **उपयुक्त भौगोलिक स्थिति:**
  - बिहार भारत के कुल मखाना उत्पादन में लगभग 90% योगदान देता है। यहाँ लगभग 15,000 हेक्टेयर क्षेत्र में मखाना की खेती होती है, जिससे प्रतिवर्ष करीब 10,000 टन **मखाने** का उत्पादन होता है।
  - यह उत्पादन मुख्यतः **मिथिलांचल क्षेत्र** में केंद्रित है, जिसमें बिहार के उत्तर और पूर्वी हिस्से के 9 ज़िले शामिल हैं।
  - मधुबनी, **दरभंगा और पूर्णिया** जैसे ज़िलों की आर्द्रभूमि **(wetland) पारिस्थितिकी** मखाना की खेती के लिये आदर्श है।

प्रभाव (Impact)	चुनौतियाँ (Challenges)
बाज़ार में वृद्धि की संभावना: बेहतर ग्रेडिंग, पैकेजिंग और ब्रांडिंग से मिथिला मखाना एक प्रीमियम अंतर्राष्ट्रीय उत्पाद बनाया जा सकता है, जिससे किसानों की आय बढ़ेगी।	**कम उत्पादकता:** खेती श्रम-प्रधान है और उच्च उत्पादक किस्मों को अपनाने की गति धीमी है।
मल्लाह समुदाय को सहयोग: पारंपरिक रूप से हाशिये पर रहे मल्लाह समुदाय को सामाजिक-आर्थिक उत्थान और रोज़गार उपलब्ध होंगे।	**प्रसंस्करण इकाइयों का अभाव:** सीमित स्थानीय बुनियादी ढाँचे के कारण कच्चे मखाने को अन्य राज्यों में कम मूल्य पर बेचना पड़ता है।
आर्थिक विविधीकरण: विस्तारित हवाई अड्डों जैसे नए निर्यात बुनियादी ढाँचे द्वारा समर्थित कृषि और खाद्य प्रसंस्करण को बढ़ावा मिलेगा।	**निर्यात अवरोध:** कार्गो सुविधाओं और निर्यात केंद्रों की कमी से प्रसंस्करण अन्य राज्यों में होता है, जिससे वैश्विक पहुँच सीमित रहती है
उत्पादकता पर ध्यान: सुवर्ण वैदेही और **सबौर मखाना-1** जैसी उच्च उत्पादक किस्मों को बढ़ावा दिया जा रहा है।	**निर्यात प्रयास:** विदेशों में छोटी खेपें भेजी गईं, लेकिन बड़े पैमाने पर वैश्विक उपस्थिति अभी भी कम है।

मखाना

- मखाना, जिसे **फॉक्स नट** भी कहा जाता है, *Euryale ferox* नामक जलीय पौधे से प्राप्त होता है, जो दक्षिण और पूर्वी एशिया के ताज़े पानी वाले तालाबों में उगता है।
- कच्चे गहरे बीज के कारण इसे अक्सर '**ब्लैक डायमंड**' भी कहा जाता है, जो फूटने पर सफेद हो जाता है।
- मखाना **कैलोरी और वसा में कम** किंतु पौध-आधारित प्रोटीन में समृद्ध होता है, साथ ही इसमें आहारीय फाइबर, एंटीऑक्सीडेंट तथा मैग्नीशियम, पोटैशियम एवं फॉस्फोरस जैसे आवश्यक खनिज प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं।
- मखाना सदियों से **हिंदू धार्मिक अनुष्ठानों** में शामिल रहा है।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/national-makhana-board-launched-in-bihar